परोपकारी बालक

एक समय समुद्र में भयंकर तूफान आने के कारण किनारे से थोड़ी दूर पर एक जहाज डूबने वाला था । उसके यात्रियों को बचाने के लिए किनारे से नाव का जाना आवश्यक था, परन्तु उसको चलाने के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता थी । ऐसे तूफान में अपने प्राण कौन संकट में डाले ? किनारे पर एक बालक खड़ा था, उसे यह सब देखकर दया आ गयी । इसलिए उसने अपनी माँ से नाव को समुद्र में ले जाने की अनुमति माँगी ।

बालक की बात सुनकर उसकी माँ के मन में मोह आ गया, क्योंकि इस बालक के पिता छः महीने पूर्व समुद्र-यात्रा पर गये थे और अभी तक लौटकर नहीं आये थे । लोगों ने समझा कि वे मर गये होंगे । उस बालक के अतिरिक्त उस स्त्री का कोई सहारा न था । उसने सोचा यदि बालक को कुछ हो गया तो मेरा कोई भी सहारा न रहेगा । यह विचार करते-करते उस स्त्री की दृटि जहाज की ओर गयी और उसने देखा कि यात्री बड़ी आतुरता के साथ नाव की प्रतीक्षा कर रहे हैं तथा जहाज पानी से भरा जा रहा है । इससे उसने सोचा कि इन लोगों के घर भी दूर होंगे, यदि इनका जहाज डूब गया तो न जाने उनके कितने भाई-बहन, संबंधी आदि को कट पहुँचेगा और मैं यदि अकेली रह गयी तो किसी भी प्रकार अपना गुजारा कर लूंगी । इसलिए उसने बालक से कहा- "मेरे बेटे ! जा, परमात्मा तुझे जीता-जागता रखे।"

इसके बाद बालक नाव को जहाज के पास ले गया और थोड़ी देर में सब लोगों के जीवन बच गये । सौभाग्य से उस जहाज में उसके पिता भी थे और वह बालक अपने पिता के साथ घर आकर माँ से बोला- "देख माँ ! तूने मुझे नाव ले जाने की आज्ञा दी तो मेरे पिताजी भी बच गये ।"

वह स्त्री अपने स्वामी को पाकर बहुत प्रसन्न हुई । वह बालक दूसरे लोगों के प्राण बचाने गया था, इसलिए उसका फल उसे अच्छा मिला । यही बालक आगे चलकर अब्राहम लिंकन के नाम से विश्वविख्यात हुआ ।

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

सौम्यता

बात सन् 1935 की है । राजेन्द्र बाबू कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये थे। वे प्रयाग गये और वहां अंग्रेजी समाचार पत्र 'लीडर' के सम्पादक श्री चिन्तामणि से भेंट करने की इच्छा से उनके कार्यालय पहुँचे । चपरासी को परिचय-पत्र दिया । वह उसे सम्पादक की मेज पर रखकर बाहर आकर बैठ गया । उधर सम्पादक महोदय अपने कार्य में व्यस्त थे और उनकी दृटि कार्ड पर गयी ही नहीं ।

बाबू जी बाहर प्रतीक्षा करने लगे । यहाँ कार्यालय तक आते-आते वर्षा के कारण उनके कपड़े भीग गये थे । जब तक अन्दर से बुलावा नहीं आता, तब तक उधर निकट ही मजदूरों की अंगीठी के पास जा बैठे और हाथ सेंकने तथा कपड़े सुखाने लगे ।

थोड़ी देर में श्री चिन्तामणि ने कार्ड देखा और वे घबरा गये । अविलम्ब वे बाहर दौड़े। राजेन्द्र बाबू वहां निकट होते तो दिखाई देते । खोज हुई तो वे मजदूरों के बीच बैठे पाये गये । चिन्तामणि जी ने अपनी सफाई देनी प्रारम्भ की और कहा "श्रीमान् , क्षमा कीजिएगा, आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी । कार्ड पर मेरा ध्यान ही नहीं गया ।" हँसते हुए राजेन्द्र बाबू ने कहा- "इसमें क्षमा की क्या बात है ? कपड़े सुखाना भी एक कार्य था । अच्छा हुआ इस बीच निपट गया।" सम्पादक "बाबूजी" की सरल तथा सौम्य मूर्ति को निहारते रह गए ।

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय